जालशयन मन्दिर तथा शिवमन्दिर - इस शैली के वास्तु के अतिरिक्त न्यारोहवर्मन द्वितीय के समय ही चिने हुए मन्दिर सम्भाजा से परस्पर सम्बंध है। तथा प्रत्येक मे पिरामिड कार शिखर स्तुपिका एवं शीर्ष है। इनमे मन्दिर का एक सुनियोजित रुपाकार प्रदान करने का प्रयत्न दृष्टिगोचर होता है। एक दम आरम्भिक प्रयोग होने के कारण ढांचे के विभिन्न तत्वो मे एकता नही आ पायी है।

कांची पुरम का कैलाशनाथ मन्दिर - मन्दिर की इस योजना मे स्तम्भो पर टिकी समतल छत वाला मण्डप पिरामिड कार शिखर वाला गर्भगृह दोनो की एक ही आक्षरेखा पर स्थिति तथा छोटी-छोटी कोठरियो की पंक्ति से घिरा आयताकार आंगन बना है। पिरामिड कार शिखर वाला गर्भगृह ~~दोनो की एक ही आक्ष रेखा पर स्थिति~~ के शिखर मे विभिन्न तल पर्याप्त संगतिपूर्ण आकारो मे विभाजित है। तथा सभी अंगो की बाह्य सीमाये लावण्य एवं सौन्दर्य से युक्त है। इस प्रकार चारो और दीवारो से घिरा आंगन स्तम्भ युक्त मंडप तथा पुजा गृह पूर्ण अवयवो के रुप मे निर्मित किये गये है।

इन्ही रुपो के समन्वय से दक्षिण भारत के वास्तु शिल्प का विकास लगभग एक सहस्र वर्ष तक हुआ।

मूर्तिशिल्प- अर्जुन और धर्मराज रथ मे पल्लव शैली की उत्कृष्ट मूर्तियाँ है। द्रोपदी रथ मे गर्भगृह की पिछली दीवार मे दुर्गा की प्रतिमा उत्कीर्ण है। अर्जुन रथ मूर्तिशुन्य है। धर्मराज रथ के ऊपरी तल मे सोमस्कन्द की क्षत विक्षत उत्कीर्ण आकृति है। अन्य रथ भीतर से अधबने है। उनके गर्भगृहो मे किसी प्रकार की मूर्तियां नही है। महाबलि पुरम मे महिषमर्दिनी अनन्त शायिन भूवाराह, गज लक्ष्मी, दुर्गा तथा ब्राह्मा आदि कुछ प्रमुख शिला उत्कीर्ण कृतियां है।

विष्णु अनन्तशायिन - यह महिषमर्दिनी मण्डप की बायी दिवार पर उत्कीर्ण है। विष्णु अपने दोनो पैर फैलाये दाहिना हाथ सिर की ओर फैलाये अनन्त (शेषनाग) की शय्या पर लेते हुए है। इनके मुख पर अपार शान्ति और निश्चलता है। अपने पांच बड़े-बड़े फनो से शेषनाग ने उनके सिर पर छत्र बनाई है। विष्णु की पत्नी लक्ष्मी आयुध छोटे मानवाकार रुपो मे क्रियाशील दिखायी गये है। मधु कैटभ राक्षस का दृश्य के दाहिनी भाग मे दर्प सहित खड़े अपनी गदा आदि का प्रदर्शन कर रहे है। विष्णु के दो गण भी इस दृश्य मे नीचे अंकित है। ———

20 April 2020 MFA - II Sem (Theory Course - IV) (II Unit) (16)

Sub- History of Indian Sculpture - 2002 T

पाण्डय एवं चोल राज वंश (द्रविड़ शैली)

दक्षिणी भारत के तामिलनाडु के मन्दिर प्रायः द्रविड़ शैली में बनाये गये हैं। द्राविड़ शैली में ये मन्दिर कांचीपुरम, तंजौर, मदुरै, श्रीरंगम, चिदम्बरम तथा रामेश्वरम आदि स्थानों पर विद्यमान हैं।

विकास शील स्थापत्य परम्परा के द्योतक ये मन्दिर अनेक प्रांगणों, भव्य विमानों और हजारों अलंकृत स्तम्भों से बने मण्डपों वाले हैं। द्रविड़ शैली के मंदिरों का निर्माण लगभग एक हजार वर्षों तक लगातार होता है। इस लम्बी अवधि में कई राजवंशों के शासकों ने शासन किया अतएव उनके नाम पर भी इन मन्दिरों के स्थापत्य की गणना की जाती है।

द्रविड़ शैली में बने इन मन्दिरों के मुख्य काल इस प्रकार थे।

1 - पल्लव काल 600 - 900 ई०
2. चोल काल 900 - 1150 ई०
3. पाण्डय काल 1150 - 1350 ई०
4 - विजयनगर काल 1340 - 1565 ई०
5 - नायक काल - 1600 - 1700 ई०

1 - पल्लव काल - द्रविड़ शैली के प्रारम्भिक मन्दिर चेन्नई के निकट महाबली पुरम और कांचीपुरम में पाये गये हैं।

महाबलीपुरम (सप्तरथ) - शैलोत्कीर्ण रथ सात हैं जिनमें पांच मुख्य हैं धर्मराज रथ, भीमरथ, अर्जुनरथ, नकुल सहदेव तथा द्रोपदी रथ इन्हें पांच पाण्डव रथ भी कहते हैं। द्रोपदी रथ के अतिरिक्त अन्य सभी रथों की छतें बहुमंजिले शिखरों से युक्त हैं जिन पर स्तूपी हैं कुछ रथ चौकोर हैं आयताकार हैं सभी शैव मन्दिर हैं। द्रोपदी रथ सामान्य चौकोर झोपड़ी के आकार का है। ऊपर अण्डाकार शिखर पर एक स्तूपी है। धर्मराज रथ द्वितल है इसका शिखर आठ पहलों वाला है। नकुल-सहदेव रथ विशुद्ध द्राविड़ शैली का है। भीम रथ व अर्जुनरथ लम्बा विमान है यह एक तल है।